Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 6, October-2023
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

इम्तियाज़ अली द्वारा निर्देशित हाईवे फिल्म की वस्तुनिष्ठ समीक्षा : एक अध्ययन

Dimple[1], Dr. Ravinder Dhillon[2]

[1] Research Scholar, Department of Journalism & Mass Communication, Chaudhary Devi Lal University, Sirsa, Haryana
[2] Associate Professor, Department of Journalism & Mass Communication, Chaudhary Devi Lal University, Sirsa, Haryana

शोध सारांश

"फिल्म एक चित्र है, फिल्म शब्द है, फिल्म आंदोलन है, फिल्म नाटक है, फिल्म संगीत है, फिल्म एक कहानी है, फिल्म हजारों अभिव्यक्तिपूर्ण श्रव्य एवं दृश्य आख्यान है।" [1]

_ सत्यजीत रे

फिल्म अथवा सिनेमा मनोरंजन का सशक्त साधन है। इसका प्रयोग कला, अभिव्यक्ति एवं शिक्षा के लिए भी किया जाता है, इसलिए कहा जा सकता है कि फिल्में समाज का आईना है और इसी रूप में दर्शकों पर अपना प्रभाव भी छोड़ती है। एक ही पल में एक विशाल जनसमूह की भावनाओं को आनंदित, उत्साहित, संवेदित और आंदोलित करने का सबसे बड़ा माध्यम फिल्में हैं। सिनेमा समाज के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को कई रूपों में और कई ढंग से अभिव्यक्त और प्रभावित कर रहा है। समाज को प्रभावित करने वाली इन बातों के बारे में भी फिल्में हमारी एक समझ बनाती हैं। इसलिए हमें यह भी देखना चाहिए कि ये फिल्में किस तरह से और किन रूपों में हमारे समाज के यथार्थ को पेश कर रही हैं।

हिंदी सिनेमा में वर्तमान समय में चर्चित निर्देशक इम्तियाज़ अली की फ़िल्में आज के दौर में मानसिक स्वास्थ और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों से जूझते युवाओं के लिए प्रेरणादायक है। इस स्थिति में शोध अध्ययन के लिए "इम्तियाज़ अली द्वारा निर्देशित हाईवे फिल्म की वस्तुनिष्ठ समीक्षा : एक अध्ययन" विषय को शोध समस्या के तौर पर चुना गया है। शोध विषय से सम्बन्धित लेखों, शोध पत्रों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि का अध्ययन करने के बाद ही शोध कार्य को आगे बढ़ाया गया है। शोध उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यह जानने का प्रयास किया है कि अली की फिल्मों के पात्र किस प्रकार तनाव, अवसाद अथवा कई मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थितियों से जूझने के बाद जीने का रास्ता दिखाते हैं।

Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 6, October-2023
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

इम्तियाज़ अली द्वारा निर्देशित इस फिल्म के पात्र सामाजिक ताने- बाने और परिस्थितियों से जूझते हुए भी किस प्रकार समाज में अपना वर्चस्व कायम करते हैं। शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस फिल्म के वस्तुनिष्ठ अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दः मानसिक स्वास्थ्य, बाल यौन शोषण, स्टॉकहोम सिंड्रॉम, तनाव, सामाजिक जागरूकता।

I. हाईवे: एक परिचय

"हाईवे" फिल्म इम्तियाज़ अली द्वारा लिखित व निर्देशित तथा साजिद नाडियावाला द्वारा निर्मित है। अनिल मेहता द्वारा सिनेमाटोग्राफी की गयी है तथा 133 मिनट की इस फिल्म में रणदीप हुड्डा व आलिया भट्ट मुख्य किरदारों की भूमिका निभाते हैं। 13 फरवरी 2014 को यह फिल्म बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित की गयी वहीं 21 फरवरी 2014 को देशभर के सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुई। यह फिल्म दिल्ली के अमीर व्यवसायी की बेटी वीरा त्रिपाठी और उसके अपहणकर्ता महाबीर भाटी की कहानी है। यह एक रोड ड्रामा है। जो 6 राज्यों पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, कश्मीर, राजस्थान और हिमाचल के करीबन 15 कस्बों, गावों और शहरों के कई स्थानों पर फ़िल्माई गयी। फिल्म की कहानी भावनात्मक रूप से सरल एवं आकर्षक है, अभिनय स्वाभाविक है लेकिन कई मायनों में समाज के कई अनछुए पहलुओं को उजागर करती है। हाईवे पर एक जगह से दूसरी जगह लम्बी यात्राओं में दोनों नायक और नायिका एक दूसरे के इतने करीब आ जाते हैं कि कम समय में एक दूसरे के दुःख को भाप लेते हैं एक दूसरे के दर्द में साझेदार बनते हैं। अंत में फिल्म के ये किरदार अपनी इन पीड़ाओं से ख़ुद भी बाहर आते हैं तथा दर्शकों को भी अपनी कहानी से माध्यम से विशेष संदेश देते हैं। पर्दे पर यथार्थ की यह अभिव्यक्ति लोगों को जागरूक करने एवं उत्पीड़न के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा देती है।

II. साहित्य समीक्षा

प्रत्येक शोध अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण घटक एक साहित्य समीक्षा है जो इस बात का लेखा-जोखा है कि किसी विषय पर क्या प्रकाशित किया गया है। इस भाग में शोध विषय से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोध कार्यों, किताबो, आलेखों एवं अन्य सम्बन्धित सामग्री की समीक्षा को शामिल किया गया है।

- कनिका कचरु आर्या (2017) इस शोध पत्र में इम्तियाज़ अली की फिल्मों की प्रेम शैली की तुलना अन्य दिग्गज फिल्म निर्माता यश चोपड़ा और राज कपूर की फिल्म शैली से की गयी है। इस शोध के निष्कर्ष में बताया गया है कि अली की फिल्में प्रेम कहानियों के अतिरिक्त ये मनोविज्ञान को दर्शाते हुए तकनीकी

रूप से भी अनूठी शैली हैं। अली बड़े पैमाने पर अपील करने वाले निर्देशकों में से नहीं हैं उनकी फिल्म के दर्शन चुनिंदा श्रेणी मे आते हैं। उनका सिनेमा अपरम्परागत है। उनके किरदार मे आम इंसानों की तरह कमियाँ हैं और समानांतर सिनेमा का मिजाज उनकी फिल्मों को यथार्थवादी बनाता है। इनका कैमरावर्क और कहानी कहने का तरीका अनूठा है। अली के सिनेमा में मानसिक स्वास्थ्य का बेहतरीन प्रस्तुतिकरण आज की युवा पीढ़ी को इस कदर प्रभावित कर रहा है कि लाखों युवा उनके अनुयायी हैं। इम्तियाज अली निस्संदेह एक समकालीन लेखक हैं जिनके सिनेमा को समीक्षकों द्वारा सराहा गया है और साथ ही उनके अनुयायी भी हैं। उन्हें रोमांटिक फिल्मों का एक अलग, ग्लैमरस और यथार्थवादी संस्करण बनाने का श्रेय जाता है।

- सोनाली श्रीवास्तव और शिखा राय (2017) इस शोध पत्र में इम्तियाज़ अली की फिल्मों की केस स्टडी द्वारा पाया गया है कि वे वर्तमान समय में युवा पीढ़ी के सबसे लोकप्रिय फिल्म निर्माता हैं जिनकी फिल्मे समानांतर और कमर्शियल दोनों सिनेमा के मध्य समंजस्य स्थापित करती हैं। इनके पात्र दूसरी फिल्मों की तरह परफेक्ट नहीं हैं अपितु उनमें बहुत सी कमियाँ हैं और इन कमियों के साथ खुद में युवा पीढ़ी को दर्शाते हुए ये पात्र शीशे द्वारा प्रतिबिंबित किये गए हैं। अली का सिनेमा समाज की एक लीक पर चलने वाली मानसिकता को दर्शाता हैं और इनके पात्र उस लीक से हटकर हैं। अपनी फिल्म में किरदारों के माध्यम से सामूहिक परिवेश में वे मानसिक स्वास्थ्य की ओर भी इशारा कर रहें हैं। इनकी फिल्मों में सामाजिक परिवर्तन के लिए क्रांतिकारी और पलायनवादी किरदार अहम हैं जो जीने का एक नया रास्ता खोजते हैं इसलिए ये युवाओं के मध्य सबसे लोकप्रिय फिल्मकार माने जाते हैं।
- पंकज सचदेवा (2020) इस आलेख के निष्कर्ष में बताया है कि इम्तियाज़ अली की फिल्मों के किरदार अपने प्रिय को याद करते हुए उनकी कल्पना प्रकृति और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उन्हें तलाशते हैं जैसे फिल्म लैला मजनू में कैसे अपनी लैला को याद करते हुए लैला कहते कहते ला इलाह इल अल्लाह चिल्लाता है, तमाशा फिल्म का वेद अपनी प्रिय तारा को याद करते हुए तारों को निहारता है और रॉकस्टार का जनार्दन अपनी हीर के लिए रांझा बन जाता है। असल ज़िन्दगी में तनाव से जूझते ये पात्र अपने घर से भाग जाते हैं, लम्बे सफ़र में और कुदरत पहाड़ों के बीच अपने आप को खोजते हैं। इनकी फिल्मों में शीशे के द्वारा पात्रों के माध्यम से एक विशेष संदेश देने के लिए प्रतिबिंबित किया गया है। दर्पण का आवर्ती रूपांकन दर्शाया गया है।
- अभिजीत पाठक, रामकृष्ण बिसवाल (2020) इस शोधपत्र में यह निष्कर्ष सामने आता है कि सिनेमा एक सार्वजनिक विश्वास प्रणाली के निर्माण का एक शक्तिशाली माध्यम है, और जब मानसिक बीमारी की बात आती है, तो सिनेमा ने हमेशा ज्ञान का प्रसार करने और मानसिक बीमारी के प्रति विश्वास और

दृष्टिकोण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा की तरह हिंदी सिनेमा का भी मानसिक रोग से पुराना नाता है। हालाँकि, हिंदी सिनेमा में मानसिक बीमारी के चित्रण में कई बदलाव हुए हैं।

विभिन्न प्रकार की मानसिक बीमारी वाले लोगों को लेबल करने के उद्देश्य से फिल्में नहीं बनाई जानी चाहिए। इसके बजाय, उन्हें सहानुभूति को सूचित करने और विकसित करने का लक्ष्य रखना चाहिए। हमें मानसिक बीमारी वाले लोगों के अधिक सामाजिक एकीकरण की आवश्यकता है और फिल्में ऐसा करने के लिए महत्वपूर्ण वाहनों में से एक हैं। मानसिक बीमारी का प्रतिनिधित्व उतना सरल नहीं है जितना लगता है। समकालीन सिनेमा ने इस दिशा में कुछ प्रगतिशील संकेत दिखाए हैं, यह अधिक प्रशंसनीय होगा यदि सामग्री के मनोरंजन अंश को खोए बिना सही जानकारी, विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य और बीमारी पर, वैज्ञानिक स्वभाव की गति को बनाए रखा जा सके।

- उमंग गुप्ता (2021) इस शोध के निष्कर्ष में बताया है कि जनता के बीच मानसिक एवं शारीरिक विकारों में जागरूकता फैलाने के लिए सिनेमा का भी विशेष योगदान है। सिनेमा घटनाओं को प्रतिबिंबित करने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य करता है। सिनेमा दर्शकों का न केवल मनोरंजन करता है अपितु जो लोग मानसिक एवं शारीरिक अक्षमताओं का सामना कर रहें हैं उन्हें शिक्षित करने, गंभीरपूर्ण मामलों एवं चुनौतीपूर्ण मामलों से अवगत कराने का भी कार्य करता है। भारतीय सिनेमा द्वारा शारीरिक या मानसिक स्थिति के बारे में मजबूत संदेश देने का बेहतर काम किया जा रहा है। विकलांगों की स्थिति और प्यार, देखभाल, अधिक ध्यान और समर्थन के तरीके उनके जीवन को बेहतर बनाने और फलने-फूलने में मदद कर सकता है। सिनेमा यह दर्शाता है कि अक्षमताओं से जूझ रहे व्यक्तियों को हेय दृष्टि से नहीं देखना चाहिए अपितु उन्हें दूसरे लोगों की तरह सामान्य रूप से जीवन जीने की के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

III. शोध के उद्देश्य

- इम्तियाज़ अली द्वारा निर्देशित हाईवे फिल्म में पात्रों को किस प्रकार मानसिक बीमारी और तनाव से जूझते दिखाया गया है इसका अध्ययन करना।
- इम्तियाज़ अली द्वारा निर्देशित फिल्मों के पात्र सामाजिक ताने- बाने और परिस्थितियों से जूझते हुए किस प्रकार समाज में अपना वर्चस्व कायम करते हैं इसका अध्ययन करना।
- इम्तियाज़ अली द्वारा निर्देशित इस फिल्म की विषयवस्तु एवं गीत - संगीत का अध्ययन करना।

Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 6, October-2023
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

IV. शोध पद्धति

इस शोध अध्ययन में निर्देशक इम्तियाज़ अली द्वारा निर्देशित हाईवे फिल्मों से संबंधित आंकड़ों का गहन अध्ययन किया जायेगा। इन आंकड़ों की प्रकृति गुणात्मक है इसलिए गहन अध्ययन के लिए एवं इस फिल्म के संजीदा और अर्थपूर्ण विश्लेषण करने के लिए वस्तुनिष्ठ समीक्षा अध्ययन अनुकूल है। शोध कार्य में इस पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। फिल्म से सम्बन्धित वस्तुनिष्ठ समीक्षा में निम्नलिखित तत्व शामिल होते हैं।

- **शीर्षक**
- **विषय**
- **कहानी**
- **कथानक**
- **उप कथानक**
- **पात्र और संवाद**
- **गीत संगीत के बोल**

- **शीर्षक** - फिल्म का शीर्षक इसकी कहानी के दृष्टिकोण से बिल्कुल सटीक है। मुख्य पात्र वीरा त्रिपाठी और महाबीर भाटी की पहली मुलाकात ही हाईवे पर हुई। जैसे जैसे कहानी आगे बढ़ती गयी पूरी फिल्म ही दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, कश्मीर, राजस्थान और हिमाचल के हाईवे के इर्द गिर्द घूमती रही। अतः यह शीर्षक इस फिल्म की कहानी के अनुसार सही रूप में चुना गया है।
- **विषय** - इस फिल्म के माध्यम से इम्तियाज़ अली ने समाज के उच्च वर्ग के माध्यम से बाल यौन शोषण तथा ग्रामीण परिवेश में ग़रीबी की मार, शोषित वर्ग पर जमींदारों के अत्याचार, घरेलू हिंसा, अपराध तथा जबरन वेश्यावृत्ति जैसे कई मुद्दों पर प्रकाश डाला है।
- **कहानी** - फिल्म की कहानी के मुख्य पात्र वीरा और महाबीर हैं। वीरा दिल्ली के एक अमीर व्यवसायी की बेटी हैं जिसकी शादी की तैयारी में पूरा परिवार जुटा हैं। वहीं महाबीर भाटी अपहरणकर्ताओं के गिरोह में शामिल एक ग्रामीण अंचल का आदमी हैं जो अब तक तीन खून कर चुका है। फिल्म की कहानी अपने शीर्षक के अनुसार हाईवे पर ही शुरू होती है जब वीरा अपने मंगेतर के साथ शादी से पहले हाईवे घूमने जाती है उसी दौरान महाबीर भाटी का गिरोह उसे अगवा कर लेता है। पुलिस से बचने के लिए वे लोग वीरा को कई राज्यों में लेकर घूमते रहते हैं। इस लम्बी यात्रा के बीच वीरा महाबीर के साथ इतनी सहज और सुरक्षित महसूस करती है कि अपने जीवन से सबसे बुरे पल भी उसके साथ साझा करती है।

वह अपने साथ हुए बचपन के भयावह हादसे के बारे में खुलकर महाबीर को बता देती है कि कैसे उसी के घर में उसके अंकल ने उसका यौन शोषण किया।

इसके साथ ही वह महाबीर की मानसिक पीड़ा को समझने और उसकी माँ के प्रति उसके प्यार को भी समझने का प्रयास करती है। कई राज्यों के हाईवे के सफ़र तय करने के बाद जब दोनों एक दूसरे को अपना लेते हैं तभी वीरा के परिवार को उस जगह का पता चल जाता है और वहीं आकर पुलिस महाबीर को गोली मार देती है तथा मौके पर ही महाबीर की मौत हो जाती है। लेकिन महाबीर की वजह से ही वीरा अपने डरों पर काबू पाना सीख जाती है। जब वीरा के परिवार वाले उसे वापिस घर लेकर जाते हैं तो वह सबके सामने अपने उसी अंकल का पर्दाफाश कर देती है। अंत में वीरा एक आत्म निर्भर और साहसी लड़की बनकर अपने घर से बाहर पहाड़ों में जाकर खुद का व्यवसाय शुरू करती है।

- **कथानक** - फिल्म की शुरआत खेतों से होते हुए पहाड़ी मार्ग, राजस्थान के टिब्बे, बर्फ की पहड़ियां, हिमाचल की वादियों में तिब्बती झंडों से होते हुए रास्तों को दर्शाते हुए शुरू होती है। इस फिल्म में वीरा त्रिपाठी (आलिया भट्ट) दिल्ली के एक अमीर व्यवसायी माणिक कुमार त्रिपाठी की बेटी हैं। अपनी शादी से एक दिन पहले वह अपने मंगेतर विनय के साथ ड्राइव पर जाती है। वीरा उसे कहती है कि शादी के घर में वो बंधन जैसा महसूस कर रही है वो खुलकर सांस लेना चाहती है। लेकिन विनय वीरा को बार बार घर चलने को कहता है। इसी बीच रास्ते में पेट्रोल पम्प पर उसका अपहरण कर लिया जाता है, जबकि विनय डर के मारे कार में बैठा रहता है। अपहरणकर्ताओं का गिरोह तब घबरा गया जब उन्हें पता चला कि उसके पिता के संबंध सरकार से हैं।

  हालाँकि, अपहरणकर्ताओं में से एक, महाबीर भाटी इस काम को पूरा करने के लिए कुछ भी करने को तैयार है। पुलिस द्वारा ट्रैक किए जाने से बचने के लिए वो लोग लगातार वीरा को विभिन्न राज्यों के कई गाँवो और शहरों में घुमाते रहते हैं। धीरे धीरे वीरा को समझ आता है कि उसे यात्रा पसंद है और वह अपने परिवार और पुराने जीवन में वापस नहीं जाना चाहती। जैसे-जैसे दिन बीतते हैं, वीरा को शांति और नई आजादी मिलती है। वीरा अपने अपहरणकर्ताओं के साथ इस हद तक सहज हो जाती है कि वह महाबीर को अपने बचपन के कठिन क्षणों के बारे में बताती है, जब नौ साल की उम्र में उसके अपने अंकल द्वारा उसका यौन शोषण किया गया था। इस अपहरण के कारण उसे जीवन जीने का अनुभव और स्वयं को खोजने का मौका मिलता है। धीरे-धीरे, वह परत दर परत महाबीर की कहानी भी खोलती है। जब वह छोटा बच्चा था तो उसके पिता, उसके और उसकी माँ दोनों ने साथ दुर्व्यवहार करते थे।

  वो छोटा महाबीर और उसकी माँ कई बार उसके पिता के हाथों घरेलू हिंसा का शिकार हुए। इसके साथ ही महाबीर की माँ को अमीर जमींदारों द्वारा जबरन वैश्यावृत्ति अथवा सेक्स स्लेव के रूप में इस्तेमाल

किया जाता था। रोजाना ये सब देख महाबीर वहाँ से भाग गया और फिर कभी नहीं लौटा। जैसे जैसे फिल्म की कहानी आगे बढ़ती है, धीरे-धीरे वह अपनी अपराधी वाली छवि भूलने लगता है और वीरा की देखभाल करना शुरू कर देता है, उसका गुस्सा कम हो जाता है। जहाँ फिल्म के शुरुआती दृश्यों में महाबीर अपने गिरोह के सामने उस लड़की को कोठे पर बेचने के लिए कहता था वहीं आदमी आगे चलकर वीरा को उन छोटे पहाड़ी कस्बों में से एक में एक पुलिस स्टेशन में छोड़ने की कोशिश करता है जहां वे रुकते हैं। हालांकि, वीरा मना कर देती है और महाबीर के साथ रहने पर जोर देती है।

जब महाबीर जबरदस्ती उसे पुलिस के सामने छोड़कर भाग जाता है फिर भी वीरा उसे ढूंढ़ कर उसके पास बस स्टैंड पहुंच जाती है। पहली बार महाबीर को लगता है कि उसके जीवन में कोई उसके लिए वापिस आया है और हमेशा गुस्से में रहने वाला इंसान फिल्म के इस दृश्य में पहली बार शांत स्वभाव के साथ मुस्कुराता हुआ दिखाई देता है। इसके बाद वे दोबारा एक साथ यात्रा करते हैं और उसे उससे प्यार होने लगता है। वे एक पहाड़ी की चोटी पर घर में रहते हैं और वीरा बताती है उसका हमेशा से सपना था कि उसका भी पहाड़ों में एक छोटा सा घर हो। वीरा जिस तरह से महाबीर की देखभाल करती है, उसे देखकर वो भावुक हो जाता है और उसे अपनी मां की याद आती है। उस रात दोनों अपने-अपने भयावह अतीत से मुक्त होकर चैन की नींद सोते हैं। लेकिन अगली सुबह, पुलिस वहाँ पहुंचती है और महाबीर को गोली मार देती है।

वीरा बार बार उसे बचाने का प्रयास करती है पुलिस को निडर होकर धमकाती है। लेकिन महाबीर की मौके पर ही मौत हो जाती है। बाद में वीरा को उसके माता-पिता घर वापस ले आते हैं। कई दिनों तक वो महाबीर को याद करती और उन दिनों को याद करते हुए शारीरिक एवं भावनात्मक रूप से टूट जाती है। फिर कुछ दिनों बाद वह जब धीरे धीरे ठीक हो जाती है। तब एक दिन अपने परिवार के सामने अपने उसी अंकल का सामना करती है जिसने बचपन में उसके साथ यौन शोषण किया था।

वह चिल्लाती है और रोने लगती है क्योंकि वह अपने पिता से पूछती है कि उन्होंने उसे केवल बाहरी लोगों से ही सतर्क रहने को क्यों चेतावनी दी। जबकि उसे असली खतरा तो परिवार के लोगों से ही था, जो लोग उसे बचपन से घेरे हुए थे। वह कहती है कि अपहरण हुआ था फिर भी वो आजाद थी जबकि यहां खुद के घर में जेल के कैदी जैसा महसूस करती रही। अंत में वह घर छोड़ देती है और पहाड़ों में रहने चली जाती है जहां वह अपनी फैक्ट्री शुरू करती है, एक घर खरीदती है और वहीं रहती है। फिल्म वीरा के पहाड़ों और फिर महाबीर को याद करते आसमान को देखने के साथ समाप्त होती है। अपनी आँखें बंद करके, वह अपने नौ वर्षीय बचपन में लौट जाती है जहां पहाड़ी पर बचपन वाले महाबीर और वीरा खुशी से खेलते हुए देखाई देते हैं।

- **उपकथानक** - फिल्म के दो मुख्य पात्रों को अलग-अलग मानसिक पीड़ाओं से घिरा हुआ दिखाया गया है। बड़े होने के बावजूद भी वे दोनों अपने बचपन के अलग-अलग हादसे के कारण तनाव झेलते हुए नजर आते हैं। वीरा जिसे नौ साल की उम्र में उसके अंकल अपनी हवस का शिकार बनाते हैं और चॉकलेट देने के बहाने घर में ही बाथरूम में उसका मुँह बंद कर बार-बार उसका यौन शोषण करते हैं। जब वह अपनी माँ को इस बारे में बताती हैं तो उसकी माँ अपनी बेटी का दर्द समझने की बजाय उसे सलाह देती है कि ये बात किसी को ना बताये। दूसरी ओर महाबीर जो ग्रामीण परिवेश का मासूम बच्चा होता है बचपन में उसे और उसकी माँ को उसके पिता की मार पीट सहनी पड़ती है। अक्सर दोनों माँ बेटे बिना वजह घरेलू हिंसा के शिकार होते हैं।

  जब भी गांव में बड़े जमींदार आते, महाबीर का पिता खुद उसकी माँ को उनके पास छोड़कर आता और खुद बाहर बैठता। उस कमरे में महाबीर की माँ का भी यौन उत्पीड़न ही होता। उसकी माँ को हर बार उसके पिता इसी तरह लेकर जाते और वापिस घर आकर मारते भी। महाबीर और वीरा दोनों अपने अपने बचपन के हादसों के कारण मानसिक पीड़ा से गुजर रहे थे। वहीं इस फिल्म में एक अन्य मानसिक स्थिति भी देखने को मिलती है - जिसका नाम हैं स्टॉकहोम सिंड्रोम। यह सिंड्रोम एक पीड़ित की मनोवैज्ञानिक स्थिति का वर्णन करता है जो अपने अपहरणकर्ता के लक्ष्यों की पहचान करता है और उनके साथ सहानुभूति रखता है। इस सिंड्रोम में एक बंधक और उसके अपहरणकर्ता के बीच विरोधाभासी संबंध प्रतीत होने लगते हैं। जिसमें बंधक अपने जीवन के कटु अनुभवों से जूझ रहा होता हैं जैसे - घरेलू हिंसा, अनाचार, बाल यौन शोषण आदि। अतः वीरा भी इसी स्टॉकहोम सिंड्रोम के कारण अपने अपहरणकर्ता महाबीर के प्रति सहज होकर सहानुभूति महसूस करती है।

- **पात्र और संवाद** –

  मुख्य पात्र : आलिया भट्ट- वीरा त्रिपाठी

  रणदीप हुड्डा - महाबीर भाटी

  दुर्गेश कुमार - आड़ू (महाबीर के गिरोह का साथी)

  रंजीत बत्रा - मिस्टर शुक्ला (वीरा के अंकल)

  रुबेन इसराइल- माणिक कुमार त्रिपाठी (वीरा के पापा)

  इम्तियाज़ अली अपने पात्रों को इस प्रकार गढ़ते हैं कि वे किसी न किसी रूप में अपूर्ण हैं जिनमें आम लोगों की तरह कमियां हैं। जिसमें नायक नायिका शुरू में अनजान होते है तथा विभिन्न भाषा और विभिन्न परिवेश से सम्बन्धित होते हुए भी अंत में आकर वे एक हो जाते हैं। फिल्म के संवाद में पात्रों के जीवन के मार्मिक क्षणों को गहन शब्दों में पिरोया गया है तथा कई दृश्यों में पात्रों के संवाद में दार्शनिकता का

परिचय मिलता है। अपने शीर्षक के अनुसार हाईवे पर जहां फिल्म शुरू होती है उन दृश्यों में एक अमीर पिता की बेटी और सब कुछ होने के बावजूद अपने घर में कैद महसूस करती है और अपने मंगेतर से बाहर घूमने के लिए कहती है, "आई वांट टू ब्रीद, ये रस्म रिवाज, आइये जी, बैठिये जी, नमस्ते जी, घाघरा झुमका, नथनी... प्लीज़ चलो यहाँ से... थोड़ी देर के लिए इस घर से दूर रहते हैं खुले में सिर्फ़ एक घंटे के लिए", इस प्रकार वो घर से बाहर आकर आजाद महसूस करना चाहती है।

आगे के दृश्यों में अपहरण हो जाने के बाद यात्रा में धीरे धीरे वो लड़की पूरी तरह खौफ़ से निजात पा लेती है और अपने डरों पर काबू करना सीखती है। एक दृश्य जहाँ वो लोग रात के खाने के लिए ढाबे पर रुकते हैं वहाँ अपने अपहरणकर्ता महाबीर के सामने बिना संकोच के अपने दर्द को साझा करते हुए कहती है, "मैं 9 साल की थी घर में...वो इम्पोर्टेड चॉकलेट्स लाते थे - मेरे अंकल। मुझे गोद में बिठाकर प्यार करते थे और अकेले में बाथरूम के अंदर फिर गोद में बिठाते थे और प्यार करते थे। चीखती थी मैं...मग़र वो मेरा मुँह बंद कर लेते थे ऐसे ताकि मेरी चीख बाहर ना निकले, बहुत दर्द होता था। शशशशश.... बस बस बस हो गया... मेरी गुड़िया, बेस्ट लड़की है, तू दुनिया की सबसे ब्यूटीफुल....फिर आते थे, बार बार आते थे अंदर चीखती थी मैं....शशशश..... शशशश... किसी से कहना नहीं... ठीक हैं...वीरा लगातार बोलती जाती है -जानवर साले...तमीज़, तहज़ीब, नमस्ते करो, पाँव छुओ इनके, हर तरफ वो ही है, उनके बीच रहना है, हँसना है, दोस्ती करनी है, प्यार करना है".

इस प्रकार आगे बढ़ती कहानी के साथ ही वीरा को महसूस होता है कि उसे ये सफर कितना प्रिय है। अपने अतीत और परिवार से दूर होकर वो अपनी वास्तविक स्वतंत्रता को पहचान पाती है और महाबीर से कहती है, "जहां से तुम मुझे लाये हो, मैं वहाँ वापस नहीं जाना चाहती। जहां भी ले जा रहे हो, वहाँ पहुंचना नहीं चाहती। पर ये रास्ता, ये बहुत अच्छा है। मैं चाहती हूँ कि ये रास्ता कभी ख़त्म ना हो"। कई जगह घूमने के बाद आगे के दृश्य में एक रात महाबीर अपने गिरोह के दूसरे सदस्य आडू के सामने अपने बचपन के दर्द और तनाव से जूझते उस गुस्से को निकलते हुए कहता है- "बांकी इज्जत है? और काहे की ना है? गरीबन की लुगाई की कहाँ इज्जत? बाहें तो ले जावै है रातन में कि शहर सू बड्डो साहब आयो है...लुगाई लगेगी आज रात। लेके कोण जागो?…बांका अपणा घर वाळा…मर्द...बाहर जमीन पर बैठेगो और लुगाई भीतर किसी और के साथ। फिर दरवाजो खुलेगो और वो अपणी लुगाई नै लेकै घर वापिस...और अपणो सारो गुस्सो लुगाई पै ही लिकाडेगो...क्योंकि ये अमीरन जब चाहे जैसे चाहे ले सकै हैं हमारी..."

इस प्रकार गाली देते हुए गुस्सा जाहिर करता महाबीर अपनी माँ के साथ हुए शोषण का जिक्र करता है। आगे के दृश्यों में रोमांचक सफर में जब दोनों एक दूसरे के दुःख को समझ जाते हैं तब वह लड़की को

कोठे पर बेचने का अपना प्लान बदल देता है। आगे चलते चलते वो दोनों एक क़ाफ़िले में शामिल होते हैं और कश्मीर की वादियों में पहाड़ों के बीच वीरा की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। आख़िर में दोनों को पहाड़ पर मिट्टी वाला कच्चा मकान मिल जाता है। वीरा उसमें सफाई करने लगती हैं शीशे में देख कर काजल लगाती हैं और महाबीर के लिए खाना पकाती है। ये सब देख कर महाबीर को अपनी माँ की याद आ जाती है। महाबीर बहुत रोता है और वीरा उसे संभाल लेती है उस रात दोनों उसी घर में एक साथ चैन की नींद सोते हैं। अगली सुबह वहाँ पुलिस आकर महाबीर को गोली मार देती हैं जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो जाती है और वीरा को उसके माता पिता वापिस दिल्ली ले जाते हैं।वहाँ जाकर भी कई दिनों तक वीरा मानसिक व शारीरिक दोनों तरह से कमज़ोर होती हैं और बार बार उसे एंग्जायटी अटैक आते हैं फिर कुछ दिनों बाद जब वो ठीक हो जाती है तो विनय, उसकी माँ और अपने माता पिता के सामने बोलती हैं, "मैं हमेशा कहती थी ना कि मैं भाग जाउंगी यहां से...मुझे इस शहर में नहीं रहना। सब कहते हैं ना... भागता कौन है?

मैं भी नहीं जाती अगर महाबीर मुझे किडनैप करके ना ले गया होता..

मग़र अब ना, मैं जा चुकी हूँ, अब मैं वापस नहीं आ सकती....

अजीब बात है, किडनैप हो गयी पर वहाँ आज़ाद थी और यहाँ जेल में"

इसी सब के बीच वीरा उन्ही अंकल को देखती और बचपन के हादसे की वहीं बातें दोहराती है कि चॉकलेट देकर कैसे उसके अंकल उसका मुँह बंद करके बाथरूम में उसका शोषण करते थे। यहीं सब बताते हुए अपने पापा की ओर देखते हुए कहती है, "वीरा घर के बाहर जाओ तो केयरफुल रहना, घर के बाहर बहुत बुरे लोग होते हैं, लड़की को हमेशा केयरफुल रहना चाहिए…

तो ये क्यों नहीं कहा मुझे घर के अंदर भी केयरफुल रहना है....

आप लोगों से भी बच के रहना है...ये क्यों नहीं कहा...

यहां तो मैं बिल्कुल एक्सपोज़ड थी, घर में थी मैं...

तो मुझे नहीं होना है सेंसिबल, मैं बेवकूफ हूँ, मैं खराब हूँ...

मगर मैं आप लोगों में से एक नहीं हूँ… मैं वापिस नहीं आउंगी....."

अतः अपहरण की उस यात्रा के दौरान वीरा आत्ममंथन करती है और अंत में अपने अतीत की भयावहता को बेख़ौफ़ होकर बोलने का हौंसला रखती है। इस प्रकार अपने दुखों और तनाव से मुक्त होकर वो वास्तव में खुद को आजाद महसूस करती है।

- **गीत और संगीत के बोल** - फिल्म में पात्रों के जीवन, अतीत और वर्तमान को दर्शाते हुए कुल 9 गीत शामिल किये गए हैं। जिनमें से "कहाँ हूँ मैं, माही वे, तू कुजा, सूहा साहा, पटाखा गुड्डी (2 वर्जन मेल व फीमेल)" 6 गानों के बोल इरशाद कामिल द्वारा लिखे गए हैं।

  फिल्म साउंडट्रैक एल्बम एआर रहमान द्वारा रचित है। शेष एक अंग्रेजी गाना "वाना मैश अप" लेडी काश और क्रिसी द्वारा लिखा व गाया गया है। शेष एक इम्प्लासिव साइलेंस के नाम से सन्नाटे में सुकून भरता संगीत हैं। सुनिधि चौहान की आवाज में "तू कुजा" का प्रारंभिक खंड प्रसिद्ध फ़ारसी वाक्यांश से है, लेकिन बाद में यह गीत मोईनुद्दीन चिश्ती की प्रशंसा में अमीर खुसरो के गीत "किरपा करो महाराज" से प्रेरित एक शुद्ध हिंदी ट्रैक है। यह गाना वीरा की मनःस्थिति को प्रकट करता है जब वो अपहरणकर्ताओ से बचकर भागती है और उसे कोई रास्ता नज़र नहीं आता तब केवल भगवान नजर आते है और इस गाने के बोल के माध्यम से वो जैसे भगवान से संवाद करती है। एआर रहमान, नूरान बहनें (ज्योति नूरान और सुल्ताना नूरान) द्वारा गाया गया "पटाका गुड्डी" 2014 के शीर्ष दस गानों में से एक रहा है, जो एक जीवंत मुक्त-उत्साही गीत जैसे प्रतीत होता है। सूफ़ी स्पर्श के साथ नूरान बहनों की आवाज़ में ये गाना वीरा के जीवन और उसके जद्दोजहद भरे जीवन में नई ऊर्जा का संकेत देता है।

  महाबीर की माँ उसके लिए जो लोरी गाती थी वो "सूहा साहा" है, इस ग्रामीण परिवेश की लोरी को इतनी सरलता से प्रस्तुत किया गया है कि इसके साथ ही यह लोरी उन भावनाओं की जटिलता का वर्णन करने में सक्षम है जो महाबीर अनुभव कर रहा है। वहीं "वाना मैश अप" गाने के दौरान वीरा हरियाणवी परिधान, पाँव में जूते और अंग्रेजी स्टाइल में आडू के साथ रोड पर डांस करती नजर आती है। "कहाँ हूँ मैं" एक ऐसा ट्रैक है जो किसी की आत्म-खोज का गीतात्मक वर्णन करता है। इस गाने में गायिका जोनिता गांधी ने कहा कि यह वह गीत है जो आपको आत्म साक्षात्कार एवं आध्यात्मिकता के दायरे में ले जा सकता है। श्वेता पंडित की आवाज़ में गीत "हीरा" में संत कबीर के पारंपरिक 3 दोहे शामिल हैं जिनके माध्यम से अंत में महाबीर को याद करते हुए आसमान में देखती वीरा अपने नए जीवन को शुरू करती है। एआर रहमान ने ट्रैक "इम्प्लोसिव साइलेंस" का वर्णन करते हुए बताया कि यह मन को शांति देने वाला, एक संगीतमय टुकड़ा है जो हाईवे पर यात्रा करते समय वीरा के दिमाग में ध्वनियों को पकड़ने की कोशिश करता है। बाद में, गीत की गायिका जोनिता गांधी ने कहा- "इम्प्लोसिव साइलेंस" गीत ऐसा गीत नहीं है जिसके लिए गीत की आवश्यकता होती है, यह अपने आप में बहुत अभिव्यंजक है और फिल्म में पात्रों द्वारा महसूस की गई भावनाओं को चित्रित करता है।

Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 6, October-2023
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

V. प्राप्तियां

शोध आंकड़ों के अध्ययन के उपरांत प्राप्तियां निम्नलिखित हैं-

- शोध अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि इस फिल्म के पात्र वीरा और महाबीर दोनों ही अपने बचपन के उत्पीड़न के कारण लम्बे समय से गहरे तनाव से जूझ रहे थे। एक ओर कम उम्र में जहां वीरा का उसी के परिवार के एक चाचा द्वारा जबरन शारीरिक शोषण किया गया वही दूसरी ओर महाबीर की माँ को उसी के पिता द्वारा जबरन वेश्यावृत्ति में धकेला गया।
- गांव के बड़े जमींदारों द्वारा उसकी माँ का भी शारीरिक शोषण होता है इसके अतिरिक्त महाबीर का पिता उसे और उसकी माँ को पीटता भी था। इन सभी परिस्थितियों में चाहे अमीर पिता की बेटी हो अथवा गांव के गरीब का बेटा दोनों ही मानसिक पीड़ाओं से गुजर रहे थे। इस फिल्म के शोध अध्ययन से प्राप्त होता है कि मानसिक तनाव के साथ ही वीरा स्टॉकहोम सिन्ड्रॉम से भी पीड़ित थी।
- इम्तियाज़ अली के पात्र फिल्म की शुरुआत में जहां एक गहरे हादसे की पीड़ा लिए जी रहे होते हैं वही पात्र अंत तक परस्पर अलग अलग परिवेश में पले-बढ़े होने के बावजूद एक अपराधी और एक पीड़िता होते हुए भी एक दूसरे के दुःख को समझते हैं और प्रेम करने लगते हैं। फिल्म के अंत में वही पात्र समाज की रूढ़िवादिता का पुरजोर विरोध करते हैं। वीरा अपने पिता और परिवार के सामने खुलकर अपने साथ हुए अन्याय का पर्दाफाश करती है।
- इस हाईवे की यात्रा में आपराधिक प्रवृत्ति का महाबीर सहानुभूति और सम्मान का पात्र बन जाता है और इस प्रकार वीरा एक निडर, बहादुर, बेधडक, बेखौफ़ लड़की बनकर सामने आती है जो इस समाज के सारे बंधनों को तोड़ने की हिम्मत रखती है और ग़लत करने वालों को मुहतोड़ जवाब देने का साहस रखती है। अंत में आत्मनिर्भर होकर घर से दूर वीरा अपना खुद का व्यवसाय शुरू करती है और पहाड़ियों में ही रहने लग जाती है।
- फिल्म की विषयवस्तु एवं कहानी जबरन वेश्यावृत्ति, बाल यौन शोषण, घरेलू हिंसा, मानसिक स्वास्थय जैसे कई सामाजिक मुद्दों पर सोचने पर प्रकाश डालती है। इस फिल्म के गीत-संगीत के बोल में भी पात्रों की तनावग्रस्त कुंठा, मानसिक परेशानियां, माँ का ममत्व, आजादी, आत्म खोज और अध्यात्मिकता का मिला जुला वर्णन देखने को मिलता हैं।

Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 6, October-2023
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

VI. निष्कर्ष

इम्तियाज़ अली द्वारा निर्देशित हाईवे फिल्म के वस्तुनिष्ठ शोध अध्ययन के बाद निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि अली ने अपने पात्रों के माध्यम से आत्म खोज और लड़कियों की स्वतंत्रता पर प्रकाश डाला है। उन्होंने हाईवे को प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करते हुए अंतर्मन की यात्रा को प्रस्तुत किया है। अपना रास्ता खुद बनाने और चलते रहने की प्रेरणा देने वाली इस फिल्म में विभिन्न सामाजिक विषमताओं के पहलू भी सामने आते हैं।

इस फिल्म में दर्शाया गया है कि माता पिता लड़कियों को हमेशा बाहरी लोगों से बचने के लिए सतर्क करते हैं लेकिन वर्तमान समय में परिवार में भी बच्चों के यौन उत्पीड़न होने की संभावना हो सकती है इस बारे में भी बच्चों की काउंसलिंग होना आवश्यक है। ऐसी स्थिति में उन्हें छूने की प्रवृत्ति के बारे में ज्ञात होना चाहिए। इसके लिए सबसे अहम है कि माता पिता द्वारा उन्हें गुड टच और बैड टच की जानकारी दी जाए। इसके साथ ही जिन महिलाओं को उनके पति अथवा किसी भी व्यक्ति द्वारा जबरन वेश्यावृत्ति में धकेला जा रहा है इसके लिए उन्हें खुद सशक्त होना पड़ेगा। अपने आत्म सम्मान और वैयक्तिक अस्मिता के लिए स्वयं संघर्षरत होना पड़ेगा। इसके साथ ही घरेलू हिंसा जैसे मुद्दे चर्चा की जाएं तो पति द्वारा पत्नी और बच्चों की मारपीट से उन छोटे बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर होता है जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि बच्चा उम्र भर अपने दिमाग में उसी पीड़ा को झेलता रहता है। इसलिए सामाजिक चेतना के लिए ऐसे मुद्दों पर खुलकर बात होनी चाहिए तथा इस परिप्रेक्ष्य में अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए नारी सशक्तिकरण अति आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे को भी मजबूत आवाज में तीखे और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है।

VII. संदर्भ ग्रंथ सूची

I. (पृष्ठ 394), जनसंचार एवं पत्रकारिता, अरिहंत पब्लिकेशन्स (इंडिया)

II. विनोद भारद्वाज (2006), सिनेमा कल, आज, कल। वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

III. जवरीमल्ल पारख (2001) लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ। अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली।

IV. Pankaj Sachdeva, & Pankaj Sachdeva. (2020). What Makes An Imtiaz Ali Movie. Filmcompanion. https://www.filmcompanion.in/features/what-makes-an-imtiaz-ali-moviewhat-makes-an-imtiaz-ali-movie

V. Srivastav, S. (2020). Mirroring the Perceptions: Escapism in Imtiaz Ali's Cinema. ResearchGate.https://www.researchgate.net/publication/341755897_Mirroring_the_Perceptions_Escapism_in_Imtiaz_Ali's_Cinema

VI. Prakash, R. a. S. D. (2021). Portrayal of Physical and Mental Illness in Indian Cinema A Thematic Analysis. http://hdl.handle.net/10603/428117

VII. Pathak, A., & Biswal, R. (2021). Mental Illness in Indian Hindi Cinema: Production, Representation, and Reception before and After Media Convergence. Indian Journal of Psychological Medicine, 43(1), 74–80. https://doi.org/10.1177/0253717620927869.

VIII. Darbar, D. (2021, May 19). Decoding Imtiaz Ali's Storytelling Style. Purpose Studio. https://www.purposestudios.in/post/jab-imtiaz-make-films-decoding-his-filmmaking-elementse-films-decoding-his-filmmaking-elements.

IX. Research paper on Self-Discovery: An important aspect in Imtiaz Ali's movies. (2021, October 21). Issue. https://issuu.com/asthash06/docs/final_project-astha_sharmahthtml

Web Sources:

I. https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://archives.palarch.nl/index.php/jae/article/download/4678/4626/8957&ved=2ahUKEwili6Ch2rj-AhWG_mEKHaeGD34QFnoECAwQAQ&usg=AOvVaw2eSLtt2TGgdKLRL7BL4MoMoR.

II. https://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/news/imtiaz-ali-all-incomplete-stories-of-my-life-complete-themselves-in-my-films/articleshow/95928246.cms

III. https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://amity.edu/UserFiles/asco/journal/ISSUE53_6.%2520Kanika.pdf&ved=2ahUKEwi659KerKb-AhUvzzgGHVbNA-YQFnoECBMQAQ&usg=AOvVaw243X3ORCWPnNHTw6vlfOfF

IV. https://en.wikipedia.org/wiki/Highway_(soundtrack)